Sign in to edit and save changes to this file.

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

आज भारत विश्व में दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल... 12 | यूपी चुनाव: बसपा पर पहले चार चरणों में बढ़त... 05

जन एक्सप्रेस

लखनऊ

वर्ष: 13 | अंक: 110

मूल्य: ₹3.00/-

पेज: 12

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper लखनऊ | मंगलवार | 01 फरवरी, 2022

चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाने के लिए एडवाइजरी जारी

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह के निर्देश क्रम में सोमवार को कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ. वाई.पी. मलिक ने किसानों को चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाने के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि चना देश में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें कैल्शियम, आयरन, विटामिन और कार्बोहाइड्रेट पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। शरीर में होने वाली रक्त की कमी, कब्ज, मधुमेह और पीलिया जैसे रोगों में चना बहुत असरकारक सिद्ध होता है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में चने का क्षेत्रफल लगभग 631 हजार हेक्टेयर है। उन्होंने बताया कि चने की फसल में यदि फली छेदक कीट का नियंत्रण समय पर नहीं किया जाता है तो पैदावार में लगभग 50 से 60 फीसदी तक का नुकसान हो जाता है। इसके जैविक नियंत्रण के लिए किसानों को फरवरी माह में 5 से 6 फेरोमेन ट्रैप प्रति हेक्टेयर लगाने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि एक या एक से अधिक फली छेदक कीट की तितलियां आने पर दवा का छिड़काव करना है। इसके लिए चना फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर एनपीबी 250 एल. ई. एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। डॉ. मलिक ने बताया कि रासायनिक नियंत्रण के लिए इंडोक्साकार्ब 14.3 एससी एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी 0.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

Sign in to edit and save changes to this file.

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

WORLD खबर EXPRESS

WORLD
खबर एक्सप्रेस
MID DAY E-PAPER

सोमवार, 31-01-2022 अंक-30
www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाएं किसान

सीएसए के कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ. वाईपी मलिक ने जारी की एडवाइजरी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश पर सोमवार को कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ. वाईपी मलिक ने चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाने के संबंध में किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है।

उन्होंने बताया कि चना देश में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें कैल्शियम, आयरन, विटामिन और कार्बोहाइड्रेट पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। शरीर में होने वाली रक्त की कमी, कब्ज, मधुमेह और पीलिया जैसे रोगों में चना बहुत असरकारक सिद्ध होता है। डॉ. मलिक ने बताया कि प्रदेश में चने का क्षेत्रफल लगभग 631 हजार

हेक्टेयर है। उन्होंने बताया कि चने की फसल में यदि फली छेदक कीट का नियंत्रण समय पर नहीं किया जाता है तो पैदावार में लगभग 50 से 60 प्रतिशत तक का नुकसान हो सकता है। डॉ. मलिक ने कहा कि चने का फली छेदक कीट शुरुआत में पत्तियों को खाता है। इसके बाद फली लगने पर

उनमें छेद कर दानों को खोखला कर देता है।

इससे दाना नहीं बन पाता व फसल खराब हो जाती है। उन्होंने इसके जैविक नियंत्रण के लिए किसानों को सलाह दी है कि फरवरी माह में पांच से छह फेरोमेन ट्रैप प्रति हेक्टेयर लगा दें। एक या एक से अधिक फली छेदक कीट की तितलियां आने पर दवा का छिड़काव करें। इसके लिए चने की फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर एनपीवी 250 एलई एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। 15 दिन बाद बीटी 750 मिली लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें या 50 प्रतिशत फूल आने पर 700 मिलीलीटर नीम का तेल प्रति हेक्टेयर घोल बनाकर छिड़काव कर दें। डॉक्टर मलिक ने बताया कि रासायनिक नियंत्रण के लिए इंडोक्साकार्ब 14.3 एससी एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी 0.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। जिससे चने की फसल सुरक्षित रहेगी व किसानों को बाजार भाव भी अच्छा मिलेगा।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्षः13 | अंकः10 | देहरादून, सोमवार, 31 जनवरी, 2022 | पृष्ठः08

चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाएं: डॉ मलिक

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ. वाई.पी. मलिक ने चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाए किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि चना देश में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है इसमें कैल्शियम, आयरन, विटामिन और कार्बोहाइड्रेट पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। शरीर में होने वाली रक्त की कमी, कब्ज, मधुमेह और पीलिया जैसे रोगों में चना बहुत असरकारक सिद्ध होता है। डॉ० मलिक ने बताया कि प्रदेश में चने का क्षेत्रफल

लगभग 631 हजार हेक्टेयर है उन्होंने बताया कि चने की फसल में यदि फली छेदक कीट का नियंत्रण समय पर नहीं किया जाता है तो पैदावार में लगभग 50 से 60% तक का नुकसान हो जाता है। डॉक्टर मलिक ने कहा कि चने का फली छेदक कीट शुरुआत में पत्तियों को खाता है। इसके बाद फली लगने पर उन में छेद कर दानों को खोखला कर देता है इससे दाना नहीं बन पाता व फसल खराब हो जाती है उन्होंने इसके जैविक नियंत्रण हेतु किसानों को सलाह दी है कि फरवरी माह में 5 से 6 फेरोमेन ट्रैप प्रति हेक्टेयर लगा दे एक या एक से अधिक फली छेदक कीट की तितलियां आने पर दवा का छिड़काव करना है। इसके लिए चना फसल में 50% फूल आने पर एनपीबी 250 एल. ई.एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें 15 दिन बाद बीटी 750 मिली लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें अथवा 50% फूल आने पर 700 मिलीलीटर नीम का तेल प्रति हेक्टेयर घोल बनाकर छिड़काव कर दें। डॉ० मलिक ने बताया कि रासायनिक नियंत्रण के लिए इंडोक्साकार्ब 14.3 एससी एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी 0.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें जिससे चने की फसल सुरक्षित रहेगी व किसान को बाजार भाव भी अच्छा मिलेगा।

FOLLOW US www.janmattoday.in facebook

चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाएं

फरवरी माह में ही चने में रोग होते हैं

- प्रदेश में 6 से 31000 हेक्टेयर में चने की खेती होती है

डीटीएनएन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में आज कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ. वाई.पी. मलिक ने चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाए किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि चना देश में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें कैल्शियम, आयरन,विटामिन और कार्बोहाइड्रेट पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। शरीर में होने वाली रक्त की कमी, कब्ज,मधुमेह और पीलिया जैसे रोगों में चना बहुत असरकारक सिद्ध होता है। डॉक्टर मलिक ने बताया कि प्रदेश में चने का क्षेत्रफल लगभग 631 हजार हेक्टेयर है। उन्होंने बताया कि चने की फसल में यदि फली छेदक कीट का नियंत्रण समय पर नहीं किया जाता है तो पैदावार में लगभग 50 से 60न्न तक का नुकसान हो जाता है। डॉक्टर मलिक ने कहा कि चने का फली छेदक कीट शुरुआत में पत्तियों को खाता है। इसके बाद फली लगने पर उन में छेद कर दानों को खोखला कर देता है। इससे दाना नहीं बन पाता व फसल खराब हो जाती है।

चना की फसल पर निगरानी की जरूरत

उन्होंने इसके जैविक नियंत्रण हेतु किसानों को सलाह दी है कि फरवरी माह में 5 से 6 फेरोमेन ट्रैप प्रति हेक्टेयर लगा दे। एक या एक से

अधिक फली छेदक कीट की तितलियां आने पर दवा का छिड़काव करना है। इसके लिए चना फसल में 50त्न फूल आने पर एनपीबी 250 एल.ई.एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। 15 दिन बाद बीटी 750 मिली लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें अथवा 50त्न फूल आने पर 700 मिलीलीटर नीम का तेल प्रति हेक्टेयर घोल बनाकर छिड़काव कर दें। डॉक्टर मलिक ने बताया कि रासायनिक नियंत्रण के लिए इंडोक्साकार्ब14.3 एससी एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी 0.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। जिससे चने की फसल सुरक्षित रहेगी व किसान को बाजार भाव भी अच्छा मिलेगा।

News Expert
15h ·

चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाए किसान:- डॉक्टर वाई पी मलिक
कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में आज कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ. वाई.पी. मलिक ने चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाए किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि चना देश में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें कैल्शियम, आयरन,विटामिन और कार्बोहाइड्रेट पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। शरीर में होने वाली रक्त की कमी, कब्ज,मधुमेह और पीलिया जैसे रोगों में चना बहुत असरकारक सिद्ध होता है। डॉक्टर मलिक ने बताया कि प्रदेश में चने का क्षेत्रफल लगभग 631 हजार हेक्टेयर है। उन्होंने बताया कि चने की फसल में यदि फली छेदक कीट का नियंत्रण समय पर नहीं किया जाता है तो पैदावार में लगभग 50 से 60% तक का नुकसान हो जाता है। डॉक्टर मलिक ने कहा कि चने का फली छेदक कीट शुरुआत में पत्तियों को खाता है। इसके बाद फली लगने पर उन में छेद कर दानों को खोखला कर देता है। इससे दाना नहीं बन पाता व फसल खराब हो जाती है। उन्होंने इसके जैविक नियंत्रण हेतु किसानों को सलाह दी है कि फरवरी माह में 5 से 6 फेरोमेन ट्रैप प्रति हेक्टेयर लगा दे। एक या एक से अधिक फली छेदक कीट की तितलियां आने पर दवा का छिड़काव करना है। इसके लिए चना फसल में 50% फूल आने पर एनपीबी 250 एल.ई.एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। 15 दिन बाद बीटी 750 मिली लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें अथवा 50% फूल आने पर 700 मिलीलीटर नीम का तेल प्रति हेक्टेयर घोल बनाकर छिड़काव कर दें। डॉक्टर मलिक ने बताया कि रासायनिक नियंत्रण के लिए इंडोक्साकार्ब14.3 एससी एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी 0.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। जिससे चने की फसल सुरक्षित रहेगी व किसान को बाजार भाव भी अच्छा मिलेगा। (डॉ खलील खान), मीडिया प्रभारी, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर।